AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में कथा एवं शिल्पो

नीति खरे
सहायक प्रोफेसर रूंगटा कॉलेज दुर्ग

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES,THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNALWEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

सार

हम सबसे पहले महादेवी वर्मा के युग की जानकारी हासिल करेंगे। इसी क्रम में महादेवी के जीवन और साहित्य का भी परिचय प्राप्त किया जाएगा। महादेवी वर्मा ने संस्मरण और रेखाचित्र की अद्भुत मिली–जुली विधा विकसित की। "अतीत के चलचित्रष् ष्स्मृति की रेखाएँष् और ष्पथ के साथीष् इसके सुन्दर उदाहरण हैं। श्श्रृंखला की कड़ियाँ नारी पीड़ा और विद्रोह का सुन्दर दस्तावेज है। महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में सूक्ष्म चित्रांकन हुआ है। इसमें एक कविता है, लय है, चित्र है। इसमें संवेदना की लहर है। भाषा में एक प्रकार की व्यंजना और लाक्षणिकता है। इसके बावजूद महादेवी वर्मा के गद्य में यथार्थ के प्रति आग्रह है। यथार्थ का यही स्वर उनके गद्य साहित्य को मज़बूत करता है।

मुख्य शब्दः *महादेवी वर्माए कथा*

प्रस्तावना

महादेवी वर्मा एक सफल कवयित्री होने के साथ–साथ एक सिद्धहस्त गद्यकार भी थीं। उनकी कविताओं और गद्य, दोनों में लेखिका की पीड़ा उभरी है। उनकी कविताओं में यह पीड़ा काफी सघन होकर उभरी है। अतः उसमें कवयित्री अंतर्मुखी होती चली गई हैं। पर जब वे गद्यकार के रूप में उपस्थित होती हैं, तो यथार्थ का सीधा सामना करती हुई दीख पड़ती हैं और खुलकर प्रहार करती हैं। सवाल यह उठता है कि महादेवी की रचनाओं में पीड़ा और वेदना की अभिव्यक्ति इतनी प्रमुखता से क्यों हुई है। महादेवी वर्मा के साहित्य में व्यक्त पीड़ा उनकी अपनी पीड़ा है। यह एक नारी का भोगा हुआ यथार्थ है। भारतीय समाज में नारी को कभी मानवीयता के स्तर पर नहीं आंका गया। नारी को या तो देवी के पद पर प्रतिष्ठित किया या कुलटा कहकर उसका बहिष्कार किया गया। नारी को हमेशा से पुरुषों के संरक्षण में जीना पड़ा। बचपन में वह अपने पिता पर आश्रित रहती है, जवानी में पति का सहारा लेती है और बुढ़ापे में पुत्र के सहारे अपना जीवन–यापन करती है। परंपरा से यह भी माना जाता है कि पति की पूजा करना पत्नी का पहला कर्तव्य

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

होता है। पति की सेवा करके ही उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। परंपरागत ग्रंथों में पति परमेश्वर की पूजा करने वाली स्त्री को पतिव्रता कहा गया है। परिवार में पुत्र और पुत्री के जन्म लेने का असर आप आज भी देख सकते हैं । जहाँ पुत्र के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती हैं, वहाँ बेटी का जन्म लेना मातम से कुछ कम नहीं होता है। सामाजीकरण की प्रक्रिया में भी अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।जन्म लेने से लेकर बुढ़ापे तक स्त्री को विनम्र, सुशील, दयालु, ममताशील आदि होने का उपदेश दिया जाता है। परिवार और समाज उसके सामने सीता और सावित्री का आदर्श रखता है। स्त्रियों के प्रति इस प्रकार के प्रत्यक्ष भेदभाव के बावजूद 19वीं और 20वीं शताब्दी में नारी के शोषण के विरुद्ध कुछ लोगों ने आवाज उठाई। राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, केशव चन्द्र सेन, दयानंद सरस्वती आदि समाजसुधारकों ने नारी की दुर्दशा की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट किया। उन लोगों ने सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, नारी शिक्षा आदि मुद्दों को बड़ी शिद्दत के साथ उठाया। ऐसी स्थिति में जब कोई स्त्री समाज के बनाए नियमों को तोड़ती है तो उसे समाज और परिवार की । अवमानना और आक्रोश का सामना करना पड़ता है। महादेवी जी ने नारी के "घर के बंधन" को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने समाज के रूढ़ बंधनों को तोड़ा और इन सभी बंधनों से मुक्त होकर कर्म–क्षेत्र में कूद पड़ीं।

हिंदी साहित्य

गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्त्रियों का आह्वान किया। स्त्रियाँ घर चौखट को लांघकर स्वतंत्रता आंदोलन में शमिल हुई। महादेवी जी पर स्पष्ट रूप से इसका असर पड़ा। उन्होंने अपनी गद्यात्मक रचनाओं में न केवल नारी की समस्याओं को उठाया बल्कि दलित और शोषित वर्ग पर हो रहे जुल्म का भी विरोध किया। उन्होंने साहित्य में नारी और दलित दोनों वर्गो की वकालत की, उनसे अपनी सहानुभूति प्रदार्शित की।

महादेवी वर्मा का जीवन परिचय ष्महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उनका परिवार सम्भ्रान्त और . सम्पन्न परिवार था। अपने बचपन को याद करती हुई वे लिखती हैं– ष्एक व्यापक विकृति के समय, निर्जीव श्संस्कारों के बोध से जड़ीभूत वर्ग में मुझे जन्म मिला है, परंतु एक ओर साधनाभूत आस्तिक और भावुक माता और दूसरी और सब प्रकार की साम्प्रदायिकता से दूर कर्मनिष्ठ एवं दार्शनिक पिता ने अपने–अपने संस्कार देकर मेरे जीवन को जैसा रूप दिया उससे भावुकता बुद्धि के कठोर धरातल पर, साधना एक व्यापक दार्शनिकता पर और आस्तिकता एक सक्रिय पर किसी वर्ग या सम्प्रदाय में न बंधने वालो चेतना पर स्थित हो सकती थी। महादेवी वर्मा की आरंभिक शिक्षा इन्दौर में हुई। फिर प्रयाग विश्वविद्यालय से इन्होंने बी.ए. और बाद में संस्कृत से एम.ए. किया। उसी समय ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या नियुक्त हुई।

महादेवी जी का विवाह वयस्कता से पूर्व अल्पावस्था में ही कर दिया गया। पर उन्होंने गार्हस्थ्य स्वीकार नहीं किया और न अपने को उन्होंने सीमित परिवार की परिधि में ही बाँधा । पर इसका मतलब यह नहीं है कि , उनका परिवार था ही नहीं। उनका परिवार बड़ा विशाल था और उसमें केवल स्त्री–पुरुष ही नहीं बल्कि फूल, वृक्ष और चिड़ियाँ भी आती थीं। इनकी सहानुभूति विश्व–व्यापी थी। विश्व के किसी कोने से किसी भी पीड़ा की कहानी सुनकर इनका मन उसकी पीड़ा में डूब जाता था। अपने द्वारा वे किसी को भी पीड़ा नहीं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

पहुँचाना चाहती थीं, इसीलिए वह कभी भी आदमी से खींचे जाने वाले रिक्शे पर नहीं बैठती थीं। महादेवी जी राष्ट्र–सेविका भी थीं। जब कभी देश में कोई आंदोलन छिड़ा या देशवासियों पर कहीं कोई विपत्ति आ पड़ी तो उन्होंने केवल अपनी लेखनी के माध्यम से ही शाब्दिक सहानुभूति नहीं प्रकट की बल्कि उसमें अपना सक्रिय सहयोग भी दिया।

1942 के आंदोलन के दौरान ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति ने अपने जुल्म से कई लोगों को मार डाला और कई परिवार बेघर और बे–आसरा हो गए। ऐसी अवस्था में उन्होंने बेसहारों को भोजन और कपड़ा पहुँचाया और जलती हुई दोपहरी में गाँव की धूल छानी। जब बंगाल में अकाल पड़ा था तो उन्होंने अकाल पीड़ितों के लिए कपड़े, भोजन और दवाइयों का इंतज़ाम किया था। उन्होंने ष्बंग दर्शनष् नामक पुस्तक का संपादन किया और इसका पूरा पैसा अकाल–पीड़ितों के सहायता कोष में दे दिया। नोआखाली पीड़ितों के लिए महादेवी जी ने हिंदी के लेखकों से पैसा इकट्ठा किया और लेखक–निधि के नाम से हिंदी लेखकों की सहानुभूति के रूप में वहां भेजा।

हिंदी के साहित्यकारों की दशा सुधारने के लिए उन्होंने अन्य साहित्यकारों के साथ मिलकर "साहित्यकार

संसद' नामक संस्था की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य साहित्यिकों को संगठित करना और असमर्थ साहित्यकारों को सहायता पहुँचाना था।

महोदवी वर्मा को उनकी काव्य–कृति "यामा" के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

महादेवी वर्मा का साहित्य–परिचय

महादेवी वर्मा का साहित्य–परिचय महादेवी वर्मा छायावादी कवियों में प्रमुख हैं। महोदवी वर्मा ने अपने काव्य–जीवन का आरंभ ब्रजभाषा में समस्या–पूर्ति के साथ किया। फिर खड़ी बोली में रोला और हरिगीतिका छंद में कविता लिखनी शुरू की । उसी समय माँ से सुनी एक करुण कथा को आधार बनाकर एक खंड काव्य भी लिख डाला। विद्यार्थी जीवन में वे प्रायः राष्ट्रीय और सामाजिक जागृति की कविताएँ लिखती रहीं जो लेखिका के कथनानुसार षविद्यालय के वातावरण में खो जाने के लिए लिखी गयी थी। उनकी समाप्ति के साथ ही मेरी कविता का शैशव भी समाप्त हो गया।

मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने से पहले वे रहस्यानुभूति से युक्त कविताएँ लिखने लगी थीं। उनके प्रथम काव्य–संग्रह –– ष्नीहारष् की अधिकांश कविताएँ उसी समय की हैं। उनके पाँच काव्य– संग्रह हैं– नीहार (1930), रश्मि (1992), नीरजा (1955), सांध्य गीत (1956), और दीपशिखा "यामाष् में उनके प्रथम काव्य संग्रहों की कविताओं का एक साथ संकलन हुआ है।

महादवी वर्मा कवि के अतिरिक्त सशक्त गघ लेखिका भी हैं। अतीत के चलचित्रष् (1941),"स्मृति की रेखाएँ (1943), शृंखला की कड़ियाँष् (194) ष्पथ के साथीष् (1956) उनके प्रमुख गद्य संकलन हैं। इसके अतिरिक्त ।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

कविता–संग्रहों की भूमिकाओं में उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा का भी पूर्ण प्रस्फुटन हुआ है। आजादी का शंख फूंकने में "चाँद" पत्रिका का योगदान अभूतपूर्व रहा है। "चाँदष के ष्फांसीष अंक ने तो काफी ख्याति प्राप्त की । इस पत्र ने एक तरफ देश को आजादी की करवट लेने के लिए सचेत किया, वहाँ दूसरी ओर सामाजिक क्रांति का शंखनाद भी किया। महादेवी वर्मा ने भी इस पत्र का संपादन किया। संपादकीय के रूप में लिखे उनके लेख ष्श्रृंखला की कड़ियाँष में संकलित हैं।

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्यः विविध रूप

महादेवी वर्मा की गद्य–कृतियों की संख्या ज्यादा नहीं है। पर कथ्य और प्रस्तुति की दृष्टि से ये कृतियाँ उत्कृष्ट हैं। उन्होंने कुल 25 संस्मरणात्मक–रेखाचित्र और 35 निबंध लिखे हैं। उन्होंने मुख्य रूप से रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध और आलोचनाएँ लिखी हैं। महादेवी जी का गद्य उनकी वैचारिक विवशता का परिणाम है। नारी जीवन और समकालीन यथार्थ पर लिखते समय उन्होंने गद्य का आश्रय लिया। काव्य–कृतियों की भूमिका में उनकी आलोचना–शक्ति का भी परिचय मिलता है। "स्मृति की रेखाएँष्अतीत के चलचित्रष और ष्पथ के साथीष में लेखिका का संस्मरण शब्द–चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। ष्श्रृंखला की कड़ियाँष में महोदवी वर्मा का नारी विषयक दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। वस्सतुतः यह नारी समस्याओं का दस्तावेज़ है।

हम यहाँ महादेवी के गद्य साहित्य का विवेचन दो भागों में करने जो रहे हैं– रेखाचित्र–संस्मरण और निबंध–आलोचना। महादेवी वर्मा का रचनाओं को देखने के बाद रेखाचित्र–संस्मरण को एक ही घड़े में रखना उपयुक्त होगा क्येंकि उनके रेखचित्र संस्मरण हैं और उनके संस्मरण रेखचित्र । इसे और भी स्पष्ट करने के लिए यह कहना उपयुक्त होगा कि उन्होंने अपने संस्मरणों को रेखाचित्रों और शब्द–चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। तो चलें, इनका अवलोकन शुरू किया जाए।

रेखाचित्र और संस्मरण

रेखाचित्र और संस्मरण के क्षेत्र में महादेवी वर्मा के तीन ग्रंथ–"अतीत के चलचित्रष, ष्स्मृति की रेखाएँष और ष्पथ के साथीष उल्लेखनीय हैं। महादेवी जी की इन रचनाओं में एक चित्रात्मकता, कथात्मकता और काव्य–प्रवाह है। इसलिए इन्हें पढ़ते वक्त कभी ये रचनाएँ रेखाचित्र प्रतीत होती हैं तो कभी संस्मरण; कभी–कभी ये कहानी से भी नाता जोड़ने लगती हैं। महादेवी वर्मा इन रेखाचित्रों के साथ कठोर धरती पर उतरी हैं, अतः दीन–हीन, पतित और अपेक्षित व्यक्तित्व इन रेखाओं एवं चित्रों के कलेवर में साँस भरते दीखते हैं। इन रचनाओं की प्रमुख विशेषता इनकी चित्रात्मकता ही है। आइए, इन रचनाओं का अलग–अलग परिचय प्राप्त करें।

अतीत के चलचित्र

अतीत के चलचित्र महादेवी जी के रेखाचित्रों का पहला संकलन है। इसका प्रकाशन पहली बार 1941 ई. में हुआ था।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

"अतीत के चलचित्र" नाम से ही स्पष्ट है कि ये अतीत के दस्तावेज़ भी हैं और घूमते–फिरते चित्र भी। इस कृति में ग्यारह रचनाएँ संग्रहीत हैं। इसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य एक–दूसरे में सिमट गया है।

अतीत के इन चलचित्रों में सर्वहारा वर्ग की झांकी प्रस्तुत की गई हैं। इसमें समा, एक विधवा युवती, बिंदा, सबिया, बिट्टो, अनाहूत की माँ, घीसा, विधवा, अलोपी, बदल, रधिया और लछमा का रेखाचित्र खींचा गया है, जिसमें लेखिका का अतीत स्पष्ट रूप से झांकता नज़र आता है।

स्मृति की रेखाएँ

महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का दूसरा संग्रह है " स्मृति की रेखाएँ। इसका प्रथम प्रकाशन 1945 ई. में हुआ। इसमें कुल सात रेखाचित्र संकलित हैं– भक्तिन, चीनी, जगिया–धनिया, मुन्नू की माँ, ठकुरी बाबा, बरेठिन गुंगिया । लेखिका ने उन्हें शीर्षकों में विभाजित नहीं किया है, पर इन शीर्षकों का आम तौर पर उपयोग किया जाता है, इसलीए हम भी उसका लाभ उठा रहे हैं। "अतीत के चलचित्र" में जहाँ लेखिका के किशोर काल के चित्र है वहाँ "स्मृति की रेखाएँ" में प्रौढ़ काल के चित्र हैं।

पथ के साथी

पथ के साथी का प्रकाशन काल 1956 ई. है। इस संकलन में लेखिका ने अपने समसामयिक कवियों के जीवन–वृत्त, परिवेश और क्रियाकलाप का चित्रण और मूल्यांकन किया है। लेखिका ने कुल सात लेखकों की जीवनी प्रस्तुत की है। कवीन्द्र रवीन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुभद्राकुमारी चौहान, सुमित्रानंदन पंत और और सियारामशरण गुप्त । वस्तुतः इन शीर्षकों के तहत इन लेखकों का " लाइफ स्केच" खींचा गया है।

निबंध और आलोचना

निबंध और आलोचना के क्षेत्र में महादेवी वर्मा की चार पुस्तकों की चर्चा की जा सकती हैरू (1) शृंखला की कड़ियाँ (1942), (2) क्षणदा (1956), (3) साहित्यकार की आस्था, (4) संकल्पिता (1969)। इसके अलावा उन्होंने अपनी काव्य–पुस्तकों की भूमिका के रूप में भी अपनी आलोचना–क्षमता का प्रमाण दिया है।

श्रृंखला की कड़ियाँ

श्रृंखला की कड़ियाँ" में कुल ग्यारह निबंध संग्रहीत हैं। ये निबंध मूलतः "चाँद" के संपादकीय के रूप में लिखे गये थे। इसमें संकलित निबंध इस प्रकार हैंरू

1. श्रृंखला की कड़ियाँ 2. युद्ध और नारी 3. नारीत्व का अभिशाप 4.आधुनिक नारी. 5. घर और

बाहर 6. हिंदू स्त्री का पत्नीत्व 7. जीवन का व्यवसाय 8. स्त्री के अर्थ–स्वातंत्र्य का प्रश्न 9. हमारी समस्याएँ 10. समाज और व्यक्ति 11. जीने की कला। . श्रृंखला की कड़ियाँ में जनता (खासकर नारी) का पीड़ित स्वर मुखरित हुआ है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

क्षणदा

क्षणदा (1956) महादेवी वर्मा का दूसरा निबंध संग्रह है। इसमें विचारात्मक निबंध भी हैं, यात्रा संस्मरण भी हैं, आलोचनात्मक निबंध भी हैं और भाषा, विज्ञान, साहित्य आदि से संबंधित निबंध भी हैं। इनका शीर्षक इस प्रकार है–1. करुणा का संदेश वाहक 2. संस्कृति का प्रश्न 3. कसौटी पर 4. दोष किसका? 5. कुछ विचार ळ. स्वर्ग का एक कोना 7. सुई दो रानी 8 कला और चित्रमय साहित्य 9 साहित्य और साहित्यकार 10. अभिनय कला 11. हमारा देश और राष्ट्रभाषा 12. हमारे वैज्ञानिक

महादेवी वर्मा के गद्य–साहित्य की विशेषताएँ

अभी आपने महादेवी वर्मा के गद्य के विविध रूपों का परिचय प्राप्त किया। अब हम इन गद्य–रूपों की विशेषताओं पर विचार–विमर्श करेंगे। चित्रांकन महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य, खासकर रेखाचित्रों और संस्मरणों, में एक प्रकार का चित्रांकन देखने को मिलता है। सूक्ष्म पर्यवेक्षण और कलापूर्ण रेखांकन इन कृ तियों की विशेषता है। सुभद्राकुमारी चौहान हो या जयशंकर प्रसाद, रामा हो या मुन्ना की माई सबका सूक्ष्म पर्यवेक्षण और कलापूर्ण रेखांकन लेखिका ने किया है। सुभद्राकुमारी चौहान का चित्रांकन करती हुई महादेवी जी लिखती हैं

मझोले कद तथा उस समय की कृश देह–यष्टि में कुछ ऐसा उग्र या रौद्र भाव नहीं था, जिनकी हम वीर–गीतों की कवयित्री में कल्पना करते हैं। कुछ भोला मुख, चौड़ा माथा, सरल भृकुटियाँ, बड़ी भाव–स्नात आँखें, छोटी सुडौल नासिका, हँसी को जगाकर गढ़े हुए होठ और दृढ़तासूचक बुद्धि । सब कुछ मिलकर एक अत्यंत निश्छल, कोमल, उदार व्यक्तित्व वाली भारतीय नारी का ही पता देते थे, पर उस व्यक्तित्व के बाहर जो बिजली का छंद था, उसका पता तो तब मिलता था जब उनके और निश्चित लक्ष्य के बीच में कोई बाधा आ उपस्थित होती थी। (पथ के साथी) अपने सेवक रामा के रूपांकन में उन्होने अदभुत चित्रांकन की क्षमता दिखाई हैरू "किसी थके झुंझलाए शिल्पी की अंतिम भूल जैसी अनगढ़ मोटी नाक, साँस के प्रवाह से फैले हुए–से नथुने हँसी से भरकर धुले हुए–से होंठ तथा काले पत्थर की प्याली में दही की याद दिलाने वाली सघन और सफेद दंत पंक्ति।ष लेखिका की पर्यवेक्षण और चित्रांकन–शक्ति के साथ उसकी कल्पना शक्ति की भी दाद देनी होगी।।

कवित्व

महादेवी वर्मा अपने गद्य साहित्य में यथार्थ की कठोर ज़मीन पर खड़ी दीख पड़ती हैं, भाषा में यथार्थ की कठोरता भी है। पर इस भाषा में ऐसा प्रवाह है, ऐसा बहाव है कि उनका गद्य काव्य बन जाता है। यह गद्य–काव्य खासकर प्रकृति–चित्रण के समय मुखर हो उठता हैरू

ष्वैशाख नए गायक के समान अपनी अग्नि–वीणा पर एक–से एक लंबा आलाप लेकर संसार को विस्मित कर देना चाहता था। "(अतीत के चलचित्र "वह गोधूलि मुझे अब नहीं भूली। संध्या के लाल सुनहली आभा वाले उड़ते हुए दुकूल पर रात्रि ने मानो छिपकर अंजन की मूठ चला दी हो।ष)

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

संवेदना

महादेवी के गद्य में संवेदना और भावुकता का मिला–जुला रूप देखने को मिलता है। यह संवेदना कहीं निराशा में परिणत होकर कारुणिक हो जाती है और कहीं विद्रोह और आक्रोश के रूप में प्रकट होती है। लेखिका की संवेदनात्मक अनुभूतियाँ प्रायः उन पात्रों के प्रति प्रकट हुई हैं जो शोषित हैं पर अपने शोषण से अनजान हैं। रामा, घीसा, अनुहूत की माँ, अलोपी, सभी समाज के शोषित और पीड़ित प्राणी हैं। यहाँ महादेवी की वेदना संवेदना में ढलकर संपूर्ण शोषित मानव समाज के प्रति समार्पित है। महादेवी वर्मा की यह सहानुभूति केवल बौद्धिक स्तर पर नहीं है बल्कि वे इनसे रागात्मक रूप में जुड़ी हुई भी हैं।

यथार्थ के प्रति आग्रह

महादेवी वर्मा ने जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने के लिए गद्य का सहारा लिया। उन्होंने अपने गद्य साहित्य के माध्यम से दीन–दलितों की दुर्दशा का चित्रण किया है। महादेवी का यथार्थ मूलतः ऐसे पीड़ित जन–समुदाय को संबोधित है जो समाज की दृष्टि से हीन होकर भी मानवता के आदर्श हैं और महान हैं। उनकी ष्लछमाष नामक पहाडिन पात्र तीन दिन भूख से पीड़ित होकर अंत में मिट्टी खाने को बाध्य होती है–ष्जब भूख हुई,. तब पीली मिट्टी का एक गोला बनाकर मुख में रखा और आँख मूंदकर सोचा–लड्डू खाया, लड्डू खाया । बस, फिर बहुत–सा पानी लिया ओर सब ठीक हो गया।– (अतीत के चलचित्र)

महादेवी वर्मा ने अपनी कृतियों में काछी, कुम्भार, धोबी, भंगी, बढ़ई, कुली, कबाड़ी, अहीर, भिखारी, वेश्या, अंधे, गूंगे, अकाल–वैधव्य से पीड़ित और जारज संतानों को ढोती नारियाँ, स्नेह की भूखी तथा कथित कलंकिनी स्त्रियों, चोर, डकैत, जुआरी, शराबी सबका यथार्थ खाका महादेवी वर्मा ने खींचा है।

भाषा और शैली

महादेवी वर्मा के गद्य की भाषा और शैली पर विचार किए बिना उनके गद्य की विशेषताओं का अध्ययन अधूरा रहेगा। महादेवी वर्मा के रेखचित्रों में एक प्रकार का कहानीपन होता है। अतीत के चलचित्रष और ष्स्मृति की रेखाएँष में कहानी के तत्व मौजूद हैं। ष्पथ के साथीष भी इस गुण से अछूता नहीं रहा है। अपने रेखाचित्रों में महादेवी जी ने कई पात्रों को अमर और जीवंत बना दिया है। उन्होंने अपने रेखाचित्रों में 25 पुरुषों–स्त्रियों के चित्र उकेरे हैं। महादेवी के इन पात्रों में अनेकरूपता है और ये निर्जीव पात्र न होकर सजीव और सक्रिय हैं। महादेवी वर्मा ने अपने गद्य को सरल और जीवंत बनाकर प्रस्तुत किया है। उनके गद्य में यथार्थ की प्रखरता भी है काव्य की मधुर धारा भी। वे विवरण में ज़्यादा नहीं पड़तीं, बल्कि संकेत से ही बहुत कुछ कह जाती हैं। जैसे ष्रामा की कोठरी में महाभारत के अंकुर जमने लगे। " संक्षेप में उनके रेखाचित्रों में सूक्ष्म चित्रण की प्रधानता है। शब्दों के चित्र बना बनकर उन्होंने परोसे हैं। महादेवी वर्मा ने अपनी साहित्य में हास्य ओर व्यंग्य का भी समावेश किया है। रामा का कुर्ता, साफा, बुंदेलखंडी जूते और गठीली लाठी किसी शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा करते जान पड़ते थे। "उनकी अखण्ड प्रतीक्षा

उद्देश्य

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

1. महादेवी वर्मा के गढ़्य साहित्य के अध्ययन लिए ।
2. महादेवी वर्मा के कथा एवं शिल्पो के अध्ययन लिए ।
3. महादेवी वर्मा के गद्य–साहित्य की विशेषता के अध्ययन लिए ।

उपसंहार

आधुनिक हिन्दी काव्य की जड़ें भारतेन्दुयुग में दृश्यमान होती हैं । विभिन्न परिस्थितियों का सामना करते – करते काव्य के विषय भी उसी के आधार पर बनने लगे । जिस में मूल प्रवृत्ति देश–प्रेम की रही । द्विवेदीयुग ने इन्हीं भावों को उजागर किया और लक्ष्य तक पहुँचाने का प्रचार किया । यहाँ हिन्दी काव्य को विस्तृत फलक भी प्राप्त हुआ । इस फलक में नयी प्रवृत्तियों का प्रवेश छायावादी कवियों के काव्यों से हुआ । शुरू में छायावाद का भी स्वर देश–प्रेम व सामाजिक उत्थान का रहा । छायावाद की मूलतः प्रवृत्ति यही बनी कि इन कवियों ने प्रकृति में अलौकिक ईश्वर (प्रियतम) के दर्शन किये । महादेवीने अपनी इसी संवेदनाओं को काव्याभिव्यक्ति दी । जिनसे छायावाद में ही नहीं किन्तु हिन्दी साहित्य में महादेवी ने अपना अलायदा स्थान प्राप्त किया । हिम–सी उज्ज्वल, जल–सी निर्मल, कुसुम–सी कोमल, सात्विक गुणों से परिपूर्ण महादेवी के व्यक्तित्व में अनोखापन है । उन्होंने समाज की सामाजिक व्यवस्था को गहेर रूप में टटोला है, राजनीति के दाँव–प्रचों को प्रखरता से भेदा है, समाज को बुराइयों की और घसीटनेवाली उसे खोखला बनानेवाली दुर्दान्त शक्तियों को खींचकर सामने लाने का प्रयत्न किया है । महादेवीजी अपने क्षण–भंगुर जीवन को समाज की सेवा में समर्पित कर देना चाहती है । माता–पिता और परिवेश से संस्कार ग्रहण करके, अपने उदात संवेदन को करूणा से सिक्त करके अपनी रचनाओं को सहृदय–संवेद्य बनाया है । हिन्दी साहित्य में महादेवी का विशेष स्थान है । उनके साहित्यिक योगदान से गद्य और पद्य दोनों समृद्ध हुए हैं । पद्य साहित्य में व्यक्त वैयक्तिक अनुभूति में नारी सुलभ संकोच, संवेदन और करूणा में उदातता तथा आध्यात्मिक चिंतन में रहस्यात्मकता है । वे काव्य में नितांत व्यक्तिनिष्ठ हैं । अनुभूति किन्तु उनका गद्य–साहित्य पूर्णतः निवैयक्तिक, संवेदन युक्त, निर्भय और ओजपूर्ण हैं । गद्य में सामान्यजन के पीड़ित जीवन का आर्तस्वर अधिकारों के प्रति सचेत करनेवाला ओजस्वी स्वर, गंभीर दार्शनिक चिंतन, प्रौढ़ साहित्यिक विवेचन ओर सौंदर्यमय सरलभाव मुखरित हुआ है।

महादेवी का सम्पूर्ण काव्य गीति काव्य है । कोमलभाव, मधुर कल्पना और गहन वेदना की अविरल अभिव्यक्ति के लिए गीत–काव्य ही उपयुक्त है । उनकी पाँचों मूल कृतियों श्निहारश, श्रश्मिश, श्नीरजाश, श्सांध्यगीतश और श्दीपशिखाश में उनकी काव्य – प्रतिभा ओर काव्य – चेतना का उतरोत्तर विकास लक्षित होता हैं । किशोरावस्था में प्रणीत श्नीहारश में किशोर कवयित्री की उत्सुकता, अभिलाषा, अकुलाहट और वेदना व्यंजित है । प्रणयी हृदय की व्याकुलता श्रश्मिश तक आते आते प्रियतम के चिंतन में परिवर्तित हो गयी और रहस्यमय प्रियतम के स्वरूप को जानने की जिज्ञासा बलवती हो गयी । जिज्ञासा का शमन होते ही गंभीर वेदना मुखर हो उटती है । श्नीरजाश के गीतों में अनुभूति की तीव्रता अधिक है, अंतर्मुखी भावनाओं का प्रवृत्ति पर आरोप सुख और दुःख में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न है । श्सांध्यगीतश में अनुभूति ही चिंतन का विषय बनने लगी । सांध्यगगन के रंगों में जीवन का रंग ढूँढनेवाली कवयित्री विरह को ही साधना और साध्य स्वीकार कर लेती है । सुख–दुःख की यह तादात्ममयी अनुभूति उदातता की भाव–भूमि

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

पर पहुँच कर श्दीपशिखाश बन जाती है, जो निरंतर जलती हुई जग के कण–कण को आलोकित करने की कामना से युक्त है । जग के आर्तक्रन्दन में कवयित्री को अपना सुख–दुःख स्मरण नहीं रह जाता । दुःख के अंधकार में घिरे प्राणियों के कष्ट–निवारण हेतु वह अपना हृदय–दीपक जलाए रखती है । प्रियतम से विरह की पराकाष्ठा मिलन की अनुभूति में परिवर्तित हो जाती है; साधना निर्वाण बन जाती है, शूल वरदान बन जाते है । अभाव में भाव की प्रतीति कर, कण–कण के स्पर्श से ही मिलन–उत्सव मनाया जाता है । श्प्रथम आयामश के शैशव–प्रयास से लेकर श्सप्तपर्णाश के परिपक्व प्रयास में, मौलिकता और अनुवाद में सर्वत्र ही महादेवी के गरिमामय व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं ।

संदर्भ सूची

1. महादेवी का गय, सूर्य प्रसाद दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. महादेवी वर्मा, इन्द्रनाथ मदान (सं0), राधाकृष्ण, प्रकाशन दिल्ली
3. महादवी वर्माः कवि और गद्यकार, लक्ष्मणदत्त गौतम, कोर्णाक प्रकाशन, दिल्ली-
4. नीहार, महादेवी वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लि., जीरो
5. रोड, इलाहाबाद, सप्तम् आवृति, सन् 1971 श्रश्मिश, महादेवी वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लि.,जीरो रोड, इलाहाबाद, सप्तम् आवृति, सन् 1961 श्नीरजाश, महादेवी वर्मा, भारती भंडार,
6. प्रयाग, संस्करण, संवत, 1013 वि. दीपशिखा, महादेवी वर्मा, भारती–भंडार, लीडर प्रेस,
7. इलाहाबाद, छठा संस्करण, संवत 2019 वि. श्यामाश, महादेवी वर्मा, भारती–भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम आवृति, सन् 1936 श्सन्धिनीश, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन 15–ए,
8. महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, संस्करण–1998 महादेवी साहित्य समग्र भाग–1, 2, 3,श, सं. निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संशोधित संस्करण 2000
9. अन्य प्रमुख सहायक संदर्भ ग्रंथ सूचि रू 1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकासश, डॉ. श्री कृष्णलाल,
10. प्रयाग, चतुर्थ संस्करण, सन् 1965 शहिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहासश, डॉ. कृष्णलाल हस, कानपुर, प्रथम संस्करण रू 1974 शहिन्दी साहित्यका इतिहासश, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, सोलहवाँ संस्करण, संवत 2025 वि.

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible forany issue.For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date.If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible.With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine.If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues.I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisherthenmy paper may be rejected or removed from the websiteanytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declarethatifpublisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

नीति खरे